International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 8; August 2016; Page No. 110-111

नक्सलवादः भारतीय लोकतंत्र की ज्वलंत समस्या

[1] श्रवण कुमार, [2] डॉ0 दिलीप कुमार

[1] शोध छात्र (राजनीति विज्ञान) नीलाम्बर पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदनीनगर, झारखंड, भारत

[2] सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग) जी0एल0ए0 कॉलेज, मेदनीनगर, झारखंड, भारत

सारांश
वर्तमान में नक्सलवाद घोर हिंसक कार्यवाहियों का पर्याय बन गया है और भारतीय लोकतंत्र के लिए ज्वलन्त समस्या बन कर उभरा है। सन् 1960 के दशक से उभरा नक्सली आन्दोलन आज देश के कई भागों को पूरी तरह अपने गिरफ्त में ले चुका है। नक्सलवाद का नाम चाहे कुछ भी दिया जाए लेकिन परिणाम समान है – हिंसा, हत्या, प्रतिशोध और सत्ता की राजनीति का खेल। माओ के दर्शन में विश्वास रखने और उसके अनुसार कार्यवाही करने वाले नक्सली आन्दोलनकारियों ने आतंकवादी तरीको का आश्रय लेना प्रारंभ कर दिया है जोकि हमारे समक्ष चुनौती बनकर खड़ा है। इसके अतिरिक्त यह स्वीकार करना चाहिए कि नक्सली या माओवादी एक सामाजिक, आर्थिक समस्या है, लेकिन आन्दोलन हिंसा के रास्ते पर चला गया है, इसलिए यह कानून व्यवस्था की स्थिति से जुड़ा है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक देश के 55 से ज्यादा जिलो में उनका असर है। आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड और उड़ीसा के अनेक जिलों में तो उनकी समानांतर सरकारें चल रही है।

मुख्य शब्दः नक्सलवाद, माओवाद, विकास एवं प्रभाव, जनतन सरकार, लोकतंत्र में नक्सलवाद, लाल गलियारा, नक्सलवाद का राजनीतिकरण, वैश्विक तथा भारतीय परिस्थितियाँ ।

प्रस्तावना

नक्सलवाद के उदय का कारण सीधे तौर पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक शोषण से जुड़ा हुआ है । क्षेत्रीयता, असंतुलित विकास, बेरोजगारी एवं मानसिक पिछड़ापन भी एक बड़ा मुद्दा है । इनके उद्देश्य ही उदय के कारणों को स्पष्ट रूप में व्यक्त करते हैं । नक्सलवाद, उग्र–विचार धारा की पृष्टभूमि पर आधारित है परन्तु मूल रूप से अलगाववाद या आतंकवाद से अलग है । ये देश के आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन चाहते हैं ।

वर्तमान में ये नक्सली संगठन हिंसक क्रिया–कलाप में पूर्णतः लिप्त हैं । वे दावा तो करते है कि उनका आम जन के एक बड़े हिस्से में प्रभाव है और लोग साथ दे रहे है, वे नक्सली गुटों के आतंक के कारण या वर्ग के दुश्मनों के कारण इसका साथ दें रहे है यह कहना कठिन है परन्तु इतना तो निश्चित रूप से सत्य है कि गरीब आम–जन दोनों के बीच पिस रहे है । सरकार भी नक्सली के साथ देने के नाम पर इन पर अत्याचार करती है और नक्सली भी अपना हित साधने के लिए इनका उत्पीड़न करते है । नक्सल विचारधारा को मानने वाले लोकतंत्र, संवैधानिक मूल्यों, राजनीतिक व्यवस्था को नहीं मानते हैं। मौजूदा समय में माओवाद की समस्या दो तरीके से चुनौती पेश कर रही है । पहला, विचारधारा के स्तर पर और दूसरा, अपराध के स्तर पर, जिसमें जबरन धन उगाही आदि शामिल है । आज नक्शली कई जगहों पर विकास योजनाओं में बाधा बनते हैं और इसके एवज में जबरन उगाही करते हैं ।

''सत्ता बंदूक की नली से निकलती है'' के प्रतिपादक माओत्से तुंग की विचारधारा पर चलनेवाला नक्सलवाद 'नक्सलवाड़ी' शब्द से बना है। यह नाम उन्हें पश्चिमी बंगाल के दार्जिलिंग जिले के सिलीगुड़ी के निकट एक गॉव नक्सलवाड़ी से मिला है। चारू मजूमदार, कानू सन्याल, मुर्जीबुर्रहमान और कोडापल्ली सीता रमैया के नेतृत्व में शुरू हुए इस आन्दोलन की अधिकांश गतिविधियाँ भू–अपहरण, फसलों को काट लेना, हिंसा, आतंक, आगजनी, लूटमार गोली मारने की घटनाओं से जुड़ी है। यह न सिर्फ कानून और व्यवस्था के लिए चुनौती है, बल्कि इससे देश की लोकतंत्रिक प्रक्रिया को भी खतरा है । जनतंत्र के तीनों अंग कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका को नकारते हुए नक्सलियों ने संसद को सुअरबाड़ा की संज्ञा दी है और जनवादी जनतंत्र की स्थापना के लिए संघर्ष का आहवान किया है । उनका मानना है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली विरोधाभासों से भरी है। सुधार के लिए उसे पूरी तरह नष्ट करना जरूरी है। उन्होनें व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए सरकारी तंत्र को निशाना बनाकर नष्ट करने की वकालत की है। इसी के मद्देनजर स्कूलों, बिजलीघरों, रेल की पटरियों, पुलों, अस्पतालों, सरकारी दफ्तरों, पुलिस चौकियों, सड़कों आदि को निशाना बनाकर नष्ट किया जाता रहा है । माओवादी सरकारी कर्मचारियों और चुने गये प्रतिनिधियों को भी अपना निशाना बना रहे हैं क्योंकि वे उन्हें 'वर्ग शत्रु' मानते है ।

जमींदारों के विरूद्ध प्रारंभ हुआ यह आन्दोलन आज सीधे सत्ता के खिलाफ हो गया है। नक्सलवादी गतिविधियों के क्षेत्र आन्ध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, तमिलनाडु, उत्तराखण्ड, केरल, कर्नाटक राज्य आ चुके है। यह लाल गलियारे के नाम से भी चर्चित हैं । गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार देश के 55 जिले नक्सली हिंसा से पूरी तरह ग्रस्त है, 17 जिले आन्दोलन से प्रभावित है, 52 जिलों में नक्सलियों का आंशिक असर है और 21 अन्य जिले नक्सलियों के निशाने पर है । छत्तीसगढ़ के बस्तर सभाग के दण्डकारण्य इलाके में नक्सली अपने द्वारा गठित समान्तर सरकार को जनतन सरकार के नाम से सम्बोधित करते है। क्षेत्रफल के हिसाब से उनकी सत्ता वहॉ केरल जैसे प्रान्त के दोगुने इलाके में स्थापित है। जनतन सरकार आदिवासियों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति को सुधारने एवं उनके बच्चों को शिक्षित करने का काम कर रही है। यह सरकार जल, जंगल एवं जमीन पर स्थानीय लोगों के हक के दर्शन से संचालित हो रही है।

नक्सली हिंसा में संलग्न गुटों में पीपुल्स वार ग्रुप प्रमुख है, जिसको कि 1980 में सी0पी0आई0 (एम0एल0) से निकले विद्रोही नेता कोड़ापल्ली सीता रमैया ने स्थापित किया । 1999 में सी0पी0आई0 (एम0एल0) का पार्टी यूनिटी के साथ विलय के बाद से यह संगठन खुद को पीपुल्स वार ग्रुप कहने लगा । पार्टी यूनिट की स्थापना 1978 में एन0 प्रसाद ने की थी । ऑध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, बिहार में इस ग्रुप का व्यापक प्रभाव है । इस ग्रुप का मुख्य कार्य भू–स्वामियों और जमींदारों पर हमला, अपहरण, धन उगाही नेताओं और पुलिस कर्मियों की हत्या करना है। दूसरा प्रमुख गुट माओइस्ट कम्युनिस्ट सेन्टर (एम0सी0सी0) है। जिसका गठन 1969 में कन्हाई चटर्जी ने किया था। 1984 में इस गुट को बिहार से नई पहचान मिली। बिहार छत्तीसगढ़, झारखण्ड और मध्य प्रदेश में इसका प्रभाव अधिक है । अनेक बर्बर नरसंहारों को इस गुट ने अंजाम दिया । पीपुल्सवार ग्रुप और एम0सी0सी0 दोनों गुटों का 14 अक्टूबर 2004 में विलय होने से कम्युनिष्ट पार्टी ऑल इण्डिया माओवादी अस्तित्व में आई । दोनों गुटों की संयुक्त गुरिल्ला सेना का नाम पीपुल्स लिब्रेशन गुरिल्ला आर्मी रखा गया है। दोनों गुटों एकजुट होने से यह आन्दोलन और मजबूत हो गया है। इन दोनों गुटों के अलावा देशभर में लगभग 20 छोटे–बड़े नक्सली संगठन सक्रिय है । नक्सली गतिविधियॉ जिस तरह से बढ़ती जा रही है, उससे स्पष्ट होता है कि इसके उभरने के लिए गरीबी एवं पिछडेपन को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, बल्कि बाहरी संपर्क नक्सली आन्दोलन के लिए खाद एवं पानी का कार्य कर रहा है । विभिन्न नामों से सक्रिय माओवादियों का देश के भीतर सुचारू नेटवर्क के साथ–साथ पूर्वोत्तर के उग्रवादी गुटों और कई अंतर्राष्ट्रीय उग्रवादी संगठनों के साथ गहरे संबंध है । नेपाल के माओवादी, श्रीलंका के लिट्टे और बंग्लादेश के आतंकवादी संगठनों जरिये उन्हें हथियारों की लगातार आपूर्ति होती रही है । श्रीलंका के आतंकवादी संगठन लिट्टे से प्रेरणा लेते हुए नक्सली भी बच्चों और महिलाओं का खुलकर इस्तेमाल कर रहे हैं । माओवादी कार्यकर्त्ताओं की 'बाइबिल' माना जाने वाला दस्तावेज 'भारतीय क्रांति की रणनीति एवं हथकंडे' (स्ट्रेटजी एंड टैक्टिस ऑफ दि इंडियन रिवोल्यूशन) नक्सलियों की हरकतों का खुलासा करता है। यह दस्तावेज बताता है कि भारत में क्रांति लाने के लिए माओवादी किस तरह के हथकंडे अपना रहे हैं ।

निष्कर्षः

समग्र रूप में कहा जा सकता है कि नक्सली गुटों का उद्देश्य तो आदर्श स्थिति का परिचायक है, परन्तु क्रिया कलाप अत्यंत हीन एवं निराशाजनक स्थिति का परिचायक है। नक्सली गुटों को समझना चाहिए कि हिंसा से कभी किसी को कुछ प्राप्त नहीं हो सकता है । इतिहास बताता है कि हिंसा से प्राप्त की हुई व्यवस्था ज्यादा दिन नहीं चल पाती है और अंततः टूट जाती है। सरकार को भी कानून –व्यवस्था की सोच से ऊपर उठकर इनकी मूलभूत समस्या को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। झारखण्ड, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, उड़िसा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र आदि राज्यों में माओवादी कैडरों ने इतनी गहरी जड़ें जमा ली हैं कि इसे सिर्फ सुरक्षा बलों के सहारे खत्म नहीं किया जा सकता है। जरूरत इस बात है कि इन कैडरों को समाज की मुख्य धारा में वापस लाये जाने के लिए हर स्तर पर ठोस पहल की जाय ताकि नक्सलवाद के सफाये में नक्सली गेहूँ के साथ गैर नक्सली व आदिवासी घुन भी न पिस जायें।

संदर्भ सूची

1. कुमार अजीत : बिहार में नक्सलवादी आंदोलन का इतिहास, जानकी प्रकाशन, पटना, 2013
2. गुरूस्वामी, मोहन : नक्सली समस्या कारण एवं निदान, शुभम पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011
3. बघेल, डॉ0 वीरेन्द्र सिंह : नक्सलवाद की चुनौतियाँ, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
4. मिश्रा, एस0के0 : नक्सलवाद, इंडिया केडब्लू पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010
5. राम, रामचन्द्र (भा0पु0से0) : नक्सलवाद झारखण्ड के झरोखे से, इंडिका इंफोमीडिया, नई दिल्ली ।
6. वर्गीज, बी0जी0: सुरक्षा और सामाजिक आक्रोश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
7. सक्सेना, विवेक एवं राजेश, सुशील : नक्सली आतंकवाद, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010
8. सिंह, डॉ0 जे0 पी0 : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्त्तन, पीएसआई लर्निंग प्रा0लि0, 2016
9. प्रतियोगिता दर्पण, अक्टूबर 1999, पृष्ट–437–438
10. प्रतियोगिता दर्पण, अगस्त 2007, पृष्ट–76–79
11. प्रतियोगिता दर्पण, जून 2010, पृष्ट–2002–2005
12. योजना : प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, फरवरी 2007, पृष्ट–5–15
13. सामान्य ज्ञान दर्पण, जनवरी 2004, पृष्ट–861
14. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, फरवरी 2006, पृष्ट–28–29
15. प्रभात खबर–राँची संस्करण, 25 जनवरी 2013, 27 मई 2013, 01 जून 2013, 23 नवम्बर 2012
16- #https://in.answers.yahoo.com>question
17- #https://www.quora.com>how-did-Naxal…..
18- #https://en.m.wikipedia.org>wiki>red…..